KÁMINIKUSUM NÁTAKA

A HINDI-DRAMA

कामिनीकुसुम नाटक

हिन्दी रसिकजनों के आनन्दार्थ अद्वितीय ग्रन्थ

जिसमें

उत्तमोत्तम संगीत के गायन रक्खे गये हैं तथा इसके

भाषा की रोचकता पर विशेष ध्यान दिया गया है

जिसे

पण्डित राधाकृष्णात्मज हरनारायण चतुर्वेदी

ने नाटक प्रेमियों के चित्त बिनोदार्थ

छपवाकर प्रकाशित किया।

G. B. H. & FRIENDS.

[CHAWK BENARES]

———:o:———

चन्द्रप्रभा प्रेस बनारस सिटी।

मूल्य ।।)   Price. 8 annas

समर्पण

श्रीयुत मान्यवर (हिन्दी भाषा के प्रेमी)

श्रीमान् १०८ महाराज सेलट गौरी शंकरजी ॥

ऐश्वर्य्य शलिनः ॥

आप हिन्दी के अन्तः करण से प्रेमी और हिन्दी ग्रन्थकारों के उत्साह तथा आश्रय दाता हैं। यह हिन्दी भाषा का कामिनी कुसुम नाटक आप की सेवा में सादर समर्पित है। आशा है कि अङ्गीकार करके कृतार्थ करेंगे ॥

समर्पयिता
हरनारायण चतुर्वेदी
बनारस.

॥ श्रीः ॥

कामिनी कुसुम

॥ नाटक ॥

॥ दोहा ॥

कामिनी के बिरह ते, पिता को भयो प्रबल संताप ।
शमनभयो कुसुम सेन सो, लखि वहि देखो आप ॥

हिन्दी रसिक जनों के आनन्दार्थ अद्वितीय नाटक
जिसमें
उत्तमोत्तम संगीत के गायन हैं
जिसे

पं० राधाकृष्ण हैड मास्टर स्कूल पारना के पुत्र
हरनारायण चतुर्वेदी ने रच कर प्रकाश किया ॥

जी० बी० एच० एन्ड फ्रेन्डस् चौक बनारस
से मिलैगी

चन्द्रप्रभा यन्त्रालय काशी ।

प्रथमावृत्ति १००० } सं० १९६४ { मूल्य प्रति पुस्तक ॥)
डाकव्यय)

॥ भूमिका ॥

विदित होकिं नागरी भाषा में आज तक नाटक बहुत थोड़े देखने में आते हैं इससे मैंने हिन्दी साहित्य की तरफ़ बिशेष ध्यानदेकर यह " कामिनी कुसुम नाटक " रचा है, और इसमें बिशेषता यह रक्खी गई है कि जो पाठक लोग किञ्चित ध्यान पूर्वक पढ़ेंगे तो उनको प्रत्यक्ष नाटक देखने का सौभाग्यप्राप्त होगा । हनुमान्नाटक इत्यादि जो बने हैं उससे शतांश उत्तमता भी इस नाटक में नहीं है तथापि आशा है कि रसिक लोग नवीन ग्रन्थ जान कर इसका आदर करेंगे। और जो कुछ अशुद्धियां ज्ञात होवें उसकी सूचना ग्रन्थकर्त्ता को दें और दोष को क्षमा कर रसिक लोग आद्यान्त पढ़कर मेरे परिश्रम को सफल करेंगे ॥

आप का कृपा भिलाषी-

हरनारायण चतुर्वेदी

बनारस·

नाटक के सङ्केत ।

नाटकों में बहुत से सङ्केत रहते हैं और उनके जाने बिना पढ़ने वालों और खेलने वालों को उसके सब स्थानों में कैसे खेलना या किस प्रकार से पढ़ना चाहिये यह बात समझ में नहीं आती इसहेतु इन सङ्केतों का जानना भी अवश्य है जो यहां लिखे जाते हैं रङ्ग भूमि-उसस्थान का नाम है जहाँ नाटक खेला जाता है) स्वगत—यह जहां लिखा रहे वहां समझना चाहिये कि यह बात खेलने वाले ने ऐसी कही मानों कोई दूसरा उसे नहीं सुनता ।

प्रकाश —जहां यह लिखा हो वहां समझना चाहिये कि खेलने वाले ने यह बात प्रगट कही ॥

स्थान—इस स्थान से यह आशय है कि रङ्ग भूमि में वही स्थान दिखाई दिया जो लिखा हो ।

जवनिका—यह उस परदे को नाम है जो रङ्ग भूमि के आगे लगा रहता है ।

नेपथ्य—उस स्थान को कहते हैं जो रङ्ग भूमिके पीछे रहता है और यदि लिखा हो (नेपथ्य में शब्द हुआ) तो समझिये कि यह बात किसी खेलने वाले ने रङ्ग भूमि में सबके सामने नहीं कही ।

( ) जो कुछ इस चिन्ह के भीतर लिखा हो उसे समझो कि यह नाटक में नहीं है केवल खेलने वालों के समझने को लिखा है किवे इस प्रकार से खेलें ॥—जहां किसी बात के पीछे— ऐसा चिन्ह हो वहां समझना चाहिये कि वह बात कहते २ रुक गया या इस बात को संकोच से ठहर कर कहता है ।

?! ये चिन्ह प्रश्न के स्थान पर और आश्चर्य्य या आतङ्क के स्थान पर आते हैं ॥

॥ नाटक के पात्र ॥

पुरुष वर्ग--(सूत्र धार औरनटी) नाटक के कर्त्ता

बीरसिंह—बर्द्धमान देश के राजा ।

चन्द्रसेन--मधुपुरी के राजा ।

कुसुमसेन—[मधुपुरी का राजकुमार] कामिनी का विवाहार्थ

जमुना भाट—बीरसिंह के सभाका कवि ।

मंत्री—राजा बीरसिंह का मंत्री ।

विदूषक—बीरसिंह की सभा का मसखरा ।

रायजी—चोरों का सर्दार ।

कोतवाल, चौकीदार, प्रतिहारी, सज्जन, चोर, इत्यादि

स्त्री वर्ग ।

महारानी—बीरसिंह की रानी ।

कामिनी—बीरसिंह की पुत्री ।

लीला--मालिन ।

प्रियम्वदा
कन्दला
बिमला
} कामिनी की सखियां

हंसी—बिदूषक की स्त्री ॥

बाराङ्गनायें, सखियाँ इत्यादि ।

॥ श्रीः ॥



कामिनी कुसुम नाटक ।

प्रथम अङ्क ।

॥ स्थान रङ्ग भूमि ॥

(सूत्रधार और नटी का ईश्वर की प्रार्थना करना)

(पद)

उमापती नमो नमो शरण गती नमो नमो ।
जटाधारी संगलिये पार्वती नमो नमो ॥
करो महादेव दया, हरो दुख पीर विथा, ।
तेरी नित नाम रटत जती सती नमो नमो ॥
यगना शरद पाय जटा धराय बना खस्ताय ।
सनातनाय नियन्ताय सिद्धा निरंजनाय ॥
तस्मई यकाराय नमः शिवाय ।
हर हर महादेव शम्भो: ॥ (पुष्प चढ़ाना)

सूत्र०-अहा आज का क्याही उत्तम दिवस है कि चित्तमें नाटक खेलने का उमङ्ग होता है । क्या प्यारी तेरी भी इच्छा है ?

नटी-नाथ ! जो आपकी आज्ञा ।

सूत्र०-तो आज अपने [हरनारायण चतुर्वेदी] का बनाया हुआ "कामिनी कुसुम नाटक" खेलें । जो सभा काव्य के गुण और दोषको सब भांति समझती है उसके सामने खेलन में मेरा भी चित्त संतुष्ट होता है ।

दोहा ।

न०-कामिनी के विरह ते, पिता को भयो प्रबल संताप ।
शमन भयो कुसुमसेनसो, लखि वहि देखो आप

(दोनों का जाना)

दूसरा गर्भाङ्क ।

॥ स्थान राजभवन ॥

[प्रतिहारी का बोलना]

दोहा ।

नृपति चक्र चूडामणि, श्री बीरसिंह महाराज ।
कन्या विद्यवान के देनको, यहां पधारें आज ॥

(राजा और मंत्री का प्रवेश)

[बाराङ्गनाओं का आना और गीत गाना]

राजन के राज महाराज छत्रपति राजा बीरसिंह २ टेक ॥
जोही जोही इच्छा करत, सोही सोही पावत सुखसार आवत हर-घड़ी निजधाम । माथे मुकुट सोहे दण्ड बाजूबन्द बिराजे, आव

भाव कटाक्ष छाजे, चन्द्र जैसी भाल अलकै नाम तेरो जग प्रकाश; रहे सुखसागर अचल रहे दण्ड प्रचंड ॥ (जाना)

राजा-[आश्चर्ययुक्त] इतने राजपुत्र आये पर उनमें मनुष्य एक भी न निकला। सब बिना शृङ्ग खुरके पशु हैं। इनसबोंका केवल राजबंश में जन्म मात्रही है। जो मैं ऐसा जानता तो अपनी कन्याको ऐसी कड़ी प्रतिज्ञा न करने देता पर अबतो उसे मिटाभी नहीं सक्ता। अब निश्चय हुआ कि हमारी पुत्री क्वारी की क्वारीही रहैगी। हां क्यों मंत्री तुमने कोई उपाय सोचा?।

मंत्री-महाराज आप जो आज्ञा करते हैं सो सच है लक्ष्मी और सरस्वती दोनों एक स्थान पर नहीं रहतीं। इससे ऐसा भाग्यशीलवर मिलनो अत्यन्त कठिन है। इनदिनों मैंने सुना है कि मधुपुरी के राजा चन्द्रसेन का पुत्र कुसुमसेन युवराज अत्यन्त सुन्दर अनेक शास्त्रों में शिक्षित और बड़ा कवि है और उसने अनेक पण्डितों को शास्त्रार्थ में जीता है।

राजा-क्या चन्द्रसेन राजा को ऐसा गुणवान पुत्र हो! और उसका समाचार हम अबतक न जानैं।

मंत्री-महाराज मैंने निश्चय सुना है कि वह अपूर्व सुंदर और अद्वितीय पंडित है। इससे मैं अनुमान करता हूं कि जिसने संसार की सब विद्या पाई है वही हमारी राजकुमारी कामिनी को पावेगा, यद्यपि ईश्वर की इच्छा और होनहार अत्यन्त प्रबल है तथापि हमको निश्चिंत होके बैठ रहना उचित नहीं, इस

कहने का अभिप्राय यह है कि आप मधुपुरी में किसीको समाचार लेनेके लिये भेजिये ।

राजा-ठीक है तो अब बिलम्ब क्यों करते हो शीघ्रही वहां किसी को भेजना चाहिये, [द्वारकी ओर देखकर] कोई है, जमना भाट को बुलाओ ।

[प्रतिहारी आकर]

प्रति०-जो आज्ञा महाराज [जाता है] ।

राजा-[खेदपूर्वक] कामिनी का यह केवल अदृष्ट है कि अब तक कहीं बिवाह नहीं ठहरता देखें क्या होता है ।

मंत्री-महाराज आजतक कोई कन्या क्वारी नहीं रही । सीता, और द्रौपदी इत्यादि जिनके बड़े २ कठिन प्रणथे उनका तो बिवाह होही गया । जब ईश्वर कन्या उत्पन्न करता है । तो उसका बरभी उसी के साथ उत्पन्न कर देता है अतएव आपको सोच न करना चाहिये ।

[प्रतिहारी के साथ जमनाभाट का प्रवेश]

दोहा ।

भाट-चन्द्र सूर्य के जोत सो बढ़े तिहारो तेज ।
शोभे साहस सत्य सुख सम्पत की सेज ॥
चरनजीव राखे सदा दूध पूत संतान ।
राज कला फूले फलो रहें सदा कल्यान ॥

राजा-कविराज ! अबतक तुमने अनेक देश में भ्रमण किया, और अनेक राजपुत्रोंको यहां लेआये परन्तु उनमें सुपात्र एकभी

न निकला, अब हम सुनते हैं कि मधुपुरी के राजा चन्द्रसेनके पुत्र कुसुमसेन ने अनेक विद्या उपार्जन की है इससे हम सोचते हैं कि वही हमारी विद्यावती कामिनी के योग्य भी होसक्ता है, इससे तुम वहां शीघ्र गमन करो और राजपुत्र को अपने संगही लेते आओ ता अति उत्तम हो जिसमें बिलम्ब न हो क्योंकि राजकन्या विवाह योग्य हो चुकी है।

भाट-महाराज यह कौन बड़ी बात है मैं अभी जाताहूं।

(जाता है)

राजा-[मंत्रीसे] चन्द्रसेन राजा को एक पत्रभी देना उचित है तुम यह सब वृत्तान्त इस रीतिसे लिखदो कि जिसमें हमारा सब कार्य्य सिद्ध होजाय और जमना भाट के याचाकी सब बस्तु शीघ्रही सिद्ध करदो जिसमें उसे बिलम्ब न हो।

मंत्री-जो आज्ञा। [सब का जाना]

॥ तृतीय गर्भाङ्क ॥

(स्थान विदूषक का घर)

(विदूषक की स्त्री हंसी खड़ी है। विदूषक आता है)

हंसी-नाथ ! आज इतनी देर कहां लगाई।

विदू०-प्यारी ! आज महाराज कन्या को बर न मिलने से अत्यन्त उदास रहे तो मैंने कहा कि आज आखेट को चलिये जिससे कुछ चित्त बहले। सो मैं महाराज के साथ मृगया को गया था इससे इतनी देरलगी।

हंसी-वहां जाकर क्या आपने भाड़ झोंका ।

बिदू०-यें यें.....वहां मैंने.....सुन कि.......त्‌त्‌.......तीनशेर २ और द्‌द्‌...........दस बकरी अं अं अं..............और प्.......प्.......पांच भालू सात ऊंट साढ़े तीन हाथी ढाई गैंड़ा और पौने यें.... चार हि...........रन सवा पांच खरगोश मारे प्यारी सब कितने हुये । हां.....कुल ४० जनावर मारे ।

हंसी-[हंसकर] ह हा हा...........तुमसे तो एक मच्छड़ भी न मारा जायगा "नाम घोड़े का काम गधे का" सच २ कहिये मच्छड़ को मार सक्ते हो ।

विदू०-हः हः हः प्यारी ! अरे मच्छड़ तो बड़े बड़ों से भी नहीं मारा जा सक्ता सुन--

ऋषी मुनी अरु साधु सन्त सब वहभी हारे मच्छड़ से ।
परमेश्वरने मानव का अभिमान उतारा मच्छड़से ॥
बीर वहादुर सारा सिपाही दुखी सारा मच्छड़ से ।
बतलाओ तो चलता है क्या जोर तुम्हारा मच्छड़ से ॥
बाघ सहस्रों जिसने मारा वह भी हारा मच्छड़ से ।
करे गर्व जो हाथी तो जायेगा मारा मच्छड़से [झूमताहै]

हंसी-वाह वाह आपने तो अच्छा राग अलापा अभीसे झूमने लगे अभी आपनें भंगतो घोटीही नहीं ।

विदू०-अहः हः हः तूने तो खूब याद धराई भंगतो अवश्यही घुटेगी घोंटनें का सोंटा कुढ़ी जल्दी से ला ।

[घोटा, कुढ़ी, भंग का सामान लाती है]

[विदूषक का भंग घोंटकर छानना और बं बं बं करना]

विदू०-[भंगपर हाथ धरकर] साधो खाई सन्तो खाई खाई कुंवर कन्हाई-जो विजया की निन्दा करै उसे खाय कालिका माई । [लोटा मुंहसे लगाकर पीता है और हंसी को देताहै] थोडा तूं भी स्वादले इसी भांगके भरोसे प्यारी [मुख चूमकर] तुझे अपनी गृहिणी बनायो है ।

हंसी०-अच्छा२ चलिये । अब बहुत वकवाद भई भोजनका समय होगया ।

विदू०-अच्छा २ सच्छा, कच्छा प्यारी चलो ।

[दोनों का गले में हाथ डालकर झूमते हुये जाना]

॥ चतुर्थ गर्भाङ्क ॥

[स्थान एक उद्यान]

॥ कुसुमसेन आता है ॥

[पद]

कुसु०-नगर की शोभा वर्णि न जाय, २ ॥ टेक ॥
या उद्यान में जब मैं आयो, देखतही मन लुभाय
बोलतहैं खगमृग नाना, बिनुश्रम चितलेत चुराय ॥
अजब छबि उपवन में छाई-भाग्य उदय जो होय ।
हमारो, कामिनी को पाऊं सही कछु न पड़े कठिनाई ॥

[स्वगत] बर्धमान की शोभा का बर्णन जैसा मैंने सुना था उससे कहीं बढ़कर पाया आहा कैसे सुन्दर २ घर बने हैं

कैसी चौड़ी २ सुन्दर स्वच्छ सड़क हैं सबलोग अपने २ का
में लग रहे हैं । और बहुतेरे लोग नदी के प्रवाह की भां
इधर उधर दौड़ रहे हैं । प्रजा लोग सुख से अपना कालद
करते हैं । निश्चय यहां का राजा बड़ा भाग्यवान है । यद्य
हमारे पिताकी राजधानी भी अत्यन्त अपूर्व है परन्तु इस स्थ
सा तो मुझे पृथिवी में कोई स्थानही नहीं दिखाई देता । इ
का बर्धमान नाम बहुत ठीक है क्योंकि इससे रूप और ध
दोनों की वृद्धि है । [हंसकर] परन्तु हमारा अभिलाषभी
र्धमान हो तो हम जानें (चारो ओर देखकर) वाह २ यह
द्यान भी कैसा मनोहर है । इसके सब वृक्ष कैसे फले फूले
और यह सरोवर कैसे निर्मल जलसे भरा हुआ है मानो स
वृक्षों ने अपने अनेक रंग के फूलों की शोभा देखने को इस
द्यान के बीच में एक सुन्दर दर्पण लगा दिया है । पक्षी
कैसे सुंदर स्वरसे बोल रहे हैं मानों पुकारते हैं कि इससे
न्दर संसार में और कोई उद्यान नहीं है, आहा कैसा मनो
स्थान है हम इस मालती के कुंज में थोड़ा विश्राम करेंगे । [
ठता है] आहा शरीर कैसा शीतल होगया । निश्चय यह प
[सांस लेकर] हमारी प्राण प्यारी त्रिभुवन मोहिनी चन्द्रमु
मृगनयनी कामिनी का अंग स्पर्श करके आता है । नहीं तो ऐ
मधुर सुगन्ध इसमें न होती । [कुछ सोच करके] यह तो स
ठीक है परन्तु जिस कामके हेतु मैं यहां आया हूं उसका
कुछ विचारही नहीं किया यहां मैं किसी को जानता पहिच

नता नहीं कि उससे कुछ उपाय पूछूं क्योंकि मैं तो यहां छिपकर आया हूं। [चिन्तानाट्य करता है] [एक चौकीदार आता है]

चौकी०-(स्वगत) ये के हो भाई ? कोई परदेशी जान पड़ला, कैसन सुन्दर रूप वाड़े, ऐसन तो हम अपनी उमरिया भरमें कबहुं न देखली, जान पड़ला कि कोई राजकुंवर हो। हमहन के कुछ घूंस फूंस देई कि नाहीं भला देखीं तो सही। [प्रकाश] कौन है ?

कुसु०-हम एक परदेशी हैं।

चौकी०-सो क्या हमें नहीं सूझता-पर कहां रहते हो।

कुसु०-हमारा घर दक्षिण है।

चौकी०-दक्षिण तो जमराज के घरतक सभी हैं। तुम किस दक्षिण में रहते हो।

कुसु०-सो नहीं, हमारा घर इतनी दूर नहीं है।

चौकी०-तो फिर कहते क्यों नहीं कि तुम्हारा घर कहां है।

कुसु०-मधुपुरी,।

चौकी०-मधुपुरी, मथुरा। जो सुनते हैं सोई मधुपुरी।

कुसु०-मधुपुरी दूसरा नगर है और मथुरा दूसरा मधुपुरी दक्षिणमें जिसको मधुरा कहते हैं। मधुपुरी, मथुरा एकही कैसी ?

चौकी०-तो फिर यहां क्यों आये हो।

कुसु०-यहां विद्या प्राप्त करने के अर्थ आये हैं।

चौकी०-कौन विद्या ?

कुसु०-जो विद्या सबमें प्रधान है ।

चौकी०-सब में प्रधान विद्या, सब में प्रधान विद्या तो चोरीहै।

कुसु०-[हंसकर] तुम्हारे यहां यही विद्या प्रधान होगी ।

चौकी०-(सोंटा उठाकर पैंतरे से चलता हुआ) हां रे यही तो हमारा काम है कि जो इस विद्या के पंडित हों उन्हे हम वैसा पुरस्कार दें ।

कुसु०-क्या पुरस्कार देता है ।

चौकी०-इस विद्या के पुरस्कार के हेतु एक यंत्र बना है । जिसका नाम काठ, तुडुम, और चोर शत्रु है ।

कुसु०-कैसा ?

चौकी०-दो बड़े २ काठ एकत्र करके चोर भाई का पांव उस के भीतर डाल देते हैं [कुसुम का दहिना पैर बलसे खींचकर अपने दोनों जांघ में रखकर दबाता है] अब जबतक हमारी पूजा न दोगे तबतक न छूटोगे ।

कुसु०-(चौकीदार को बल पूर्बक लात मारता है और चौकीदार पृथ्वी पर लुढ़क जाता है) लो तुह्मारी यही पूजा है ।

चौकी०-[उठ करके] बच्चा अभी तुमको दूसरा पुरस्कार नहीं दिया चार पांच बेंत तुम्हारे चूतड़ पर लगें तब जानो ।

कुसु०-बस अब बहुत भई-मुंह सम्हाल के बोल नहीं तो एक मुक्का ऐसा मारूंगा कि पृथिवी पर लोटने लगेगा, और दक्षिण

दिशा में यमराज के घर को गमन करेगा, जिसके हेतु तू इतना उपद्रव करता है सो मैं जानता हूं, परन्तु धमकी दिखाने से तो मैं एक भंझी कौड़ी भी न दूंगा और तुझको भी परदेशियों से झगड़ा करना उचित नहीं [कुछ देता है] इसे ले और अपने घर चल दे ।

चौकी०-[आनन्द से लेकर] नहीं २ हमने आपको जाना नहीं, निस्संदेह आप बड़े भाग्यवान पुरुष हैं हम आशीर्वाद देते हैं कि आप अनेक बिद्या लाभ करें, राजकुमारी कामिनी भी आपको प्राप्त हो । [हंसता हुआ जाता है]

कुसु०-आज बहुत बचे नहीं तो यह दुष्ट बहुत कुछ दुख देता, जिस काम को चलो उसमें प्रथमही अनेक प्रकारके विघ्न होते हैं [श्रेयांसि बहु बिघ्नानि] देखें अब क्या होता है ।

[पेड़ के नीचे बैठता है] [लीला मालिन आती है]

[गाती है]

हांरे मैं तो छोटी चंबेलि खिलति ॥ टेक ॥
तन चंबेलि मन चंबेलि, ।
दिले बसेलि छबिलि चंबेलि खिलति, ॥
हार चंबेलि वा गजरा चंबेलि ।
छब भरि है नबेली चंबेलि खिलति ॥

लीला-[आश्चर्य से] अरे यह कौन है, हाय, २ ऐसा सुन्दर रूप तो न कधी आंखों देखा न कानों सुना इसकी दोनों हाथ से बलैयां लेने को जी चाहता है, मालूम होता है

कि चन्द्रमाही पृथिवी पर उतर के बैठा है, क्या कामदेव इस रूपकी बराबरी कर सक्ता है । ऐसी कौन स्त्री है जो इसको देख के मोहित न होजायगी मैं सोचती हूं कि यह कोई परदेशी है क्योंकि इस नगर में ऐसा कोई नहीं है जिसको लीला न जानती हो, हाय, २ इसके मा बाप का कलेजा पत्थर का है कि ऐसे सुकुमार सुंदर नवयुवक को घरसे निकलने दिया निश्चय इसको स्त्री नही हैं, नहीं तो ऐसे पति को कभी न छोड़ती, । जो कुछ हो एक बेर इससे पूछना तो अवश्य चाहिये । (पास जाकर हंसती हुई) क्योंजी तुम कौन हो ? हमको तो कोई परदेसी जान पड़ते हो ।

कुसु०-[स्वगत] अब यह कहां की खखखड़ आई [प्रकाश] हमारा घर दक्षिण है और विद्या उपार्जन करने के लिये यहां तक आये हैं ।

लीला-उतरे कहां हो ।

कुसु०-अभी कहां उतरे हैं, इसी वृक्ष की ठंडी छाया में बिश्राम किया है, क्योंकि इस नगर में हमारा कोई जान पहिचान का नहीं है अबतक उतरने का कोई निश्चय नहीं हुआ तुम कौन हो ? ।

लीला-मैं राजा के यहां की मालिनहूं मेरा नाम लीला है-मैं सदा अनेक प्रकार की लीला किया करतीहूं मेरा काम यही है कि मैं रोज राजकुमारी कामिनी को फूलों के हार गुच्छे गजरे पहुंचाती हूं । हमारे ऊपर रानी और राजकुमारी की बड़ी

दया रहती है। अभी तो आपने अपने रहने का निश्चय कहीं नहीं किया है। हमें कहने में लाज आती है क्योंकि हमारे यहां बड़ी २ अट्टालिका हवेली तो हैं नहीं केवल एक झोंपड़ी है जो आप हमारी कुटिया को पवित्र करने का बिचार करें तो मेरे यहां चलिये हम सेवा में सब भांति तत्पर रहेंगे।

कुसु०-[स्वगत] जो रहने का ठिकाना होगा तो काम का भी ठिकाना हो रहेगा। इसमें हमारी क्या हानि है क्योंकि यह रात दिन रनिवास में आती जाती है-इसमे वहां के सब समाचार मिलते रहेंगे ऐसे कामों में यदि बीचवाला उत्तम मिले तो सिद्ध होने में बिलम्ब नहीं होता (प्रकाश) अत्र इससे बढ़कर हमारा क्या उपकार होगा कि इस परदेस में हमको आप से आप रहने को घर मिलै। तुमने हम पर बड़ी कृपा किया आज से तुम हमारी मांमी और हम तुम्हारे भानजे।

लीला-नहीं २ आप तो हमारे बापके भी अन्नदाता हैं यह हमारे भाग्य की बात है कि आप ऐसा कहते हैं तो आज से हम तुम्हें बेटा कहेंगे-हाय २ इस बिचारे का मुंह कैसा सूख गया है अब बेटा अपने घर चलो जो कुछ हमारा है सब तुम्हारा है।

कुसु०-हां मांमी चलिये।　　[जाना]

[जवनिका गिरती है]

॥ प्रथमाङ्क समाप्त ॥



॥ दूसरा अङ्क ॥

॥ प्रथम गर्भाङ्क ॥

[स्थान लीला मालिन का घर]

(लीला और कुसुम एक तरफ दबक के खड़े हैं और चार चोर सेंध लगा रहे हैं) [दीवार का भर भराय के गिरना एक चोर का दब मरना तीन का जी लेकर भागना] ।

कुसु०-मांमी आज बहुत बचे नहीं तो ये चोर न मालूम क्या अनर्थ करते ईश्वर बड़ा समर्थ है कि उसने हमलोगों की रक्षाकी।

लीला-हां बेटा ! मैं केवल उसी के आसरे इस झुपड़िया में रहती हूं, मेरे कोई चौकी पहरा तो है नहीं।

कुसु०-रनिवास का समाचार जो तुमने कहा था, तो क्या राजा को एकही कन्या है ?

लीला-हां बेटा, केवल एकही कन्या है पर वह साधारण कन्या नहीं है, मानों उर्वशी श्राप से राजगृह में जन्मी है। और राजा रानी उसको प्राण से भी अधिक समझते हैं वह उनको ऐसी प्यारी है "जैसे चन्द्रको चकोर"

कुसु०-भला मांमी वह राजकन्या कैसी है।

लीला-बेटा उसकी सुंदरता को सहस्र मुख शेषनाग भी बर्णन नहीं करसक्के । [गाती है]

[राग सोरठ तिताला]

कहो वह कैसे बरनै रूप ॥ २ टेक ॥

नख शिखसों सबहीं बिधि सुंदर शोभा अतिहि अनूप ।
नैन धरे को कौन सफल जो नैन न देख्यो वाहि ॥
कोटि चन्द हू लाज करत हैं तनकि बिलोकत जाहि ।
घुंघुरारे सटकारे कारे बिथुरे सुथरे केस ॥
पद लौ लांवे अति शोभित नव जलधर के भेस ।
लचकीली कटि अतिहि पातरी चालत झोका खाय ॥
अति सुकुमार सकल अङ्ग वाको कवि सों वर्णो न जाय ।
दिन २ जोबन बढ़त उमंग अति पूरि रहे सब गात ॥
लाजभरी चितवन चित चोरत जब मुसुकाय जंभात ।
तरुणाई अङ्गाई अङ्ग २ नैन रहत ललचाय ॥
मनुजग जुबजन जीतन एकहि बिधिना रची बनाय ॥

बेटा उसका हम कहां तक बर्णन करैं वह शोभा देखतेही बन आती है कुछ कही नहीं जाती उसकी प्रतिज्ञा तो तुमने सुनीही होगी ?

कुसु०-हां मामी यह सब बात तो हमें मालूम है पर हम चाहते हैं कि एक बेर राजसभा में जाकर कामिनी के विद्याकी परीक्षा करें जो जीत गये तो वाह वाह ! सब काम सिद्ध होगया और जो हारगये तो कुछ लाज नहीं क्योंकि हमें इस नगर में कोई पहिचानता नहीं । भला मामी एकदिन हमारे हाथ का बना गजरा तू वहां ले जा सक्ती है ।

लीला-[हंसकर] वाह बेटा तुम क्या गजरा बनाना भी

जानते हो ? तुमलोगों का तो यह काम नहीं है क्यों गजरा बनाकर राज कन्या के गले के हार हुआ चाहते हो ।

कुसु०-नहीं मामी हम केवल एकही प्रकार का गजरा गूंथने जानते हैं । जिसे तुम देख लेना जो अच्छा बने तो राजकन्या के पास लेजाना ।

लीला-[हंसकर] अच्छा कल तुम गजरा बनाना देखें कैसा बनता है अब रात बहुत गई उठो और कुछ भोजन करके सो रहो । [जाना]

॥ द्वितीय गर्भाङ्क ॥

॥ स्थान कामिनी का महल ॥

[लीला मालिन का प्रवेश हाथ में डाली लिये हुये]

लीला-[हंसकर] हमारी प्यारी राजपुत्री कहां है [सन्मुख देखकर] अहा यहां बैठी हैं, आज मुझ को यह गजरा गूंथने में बड़ा बिलम्ब हुआ इससे मैं भागी चली आती हूं । यह गजरा लीजिये और आज का अपराध क्षमा कीजिये ।

कामि०-चल बहुत बातें न बना, जो रातभर मौज उड़ावेगी, तो सबेरे जल्दी कहां से आ सकेगी युवावस्था ढली जाती है तबभी मन अबतक सोलही बर्ष का है । इतना दिन चढ़ आया, अभीतक मैंने पूजा नहीं की पर तुझे क्या तूं तो अपने रङ्ग में रंगरही है मेरी पूजा हो या न हो ।

लीला०-वाह २ बाल खिचड़ी हुये दांत हिलने लगे, गाल पचक चले तबभी मैं क्या षोडष वर्षीवालाही बनी हूं-आप धन्य

हैं मैंनें तो बड़े परिश्रम से यह गजरा गूंथा है कि राजकुमारी इसको देखकर अति प्रसन्न होंगी उसके बदले आप हमको झिड़कती हैं सच है "अभागे को कहीं भी सुख नहीं मिलता" अब हमनें अपना कान पकड़ा ऐसा अपराध अब कभी न होगा अबकी बार क्षमा कीजिये।

[गजरा और फूलों की डाली देती है]

कामि०-[गजरा हाथ में लेकर] वाह २ आज का गजरा तो बड़ा सुन्दर बना है [डाली में से फूलों का धनुष बाण उठाकर] क्योंरी इसमें यह फूलों के धनुष बाण कहां से आये क्या तूं हमसे हंसी करती है सच बता यह गजरा और धनुष बाण किसके बनाये हैं।

लीला-दासी के सिवाय और कौन बनावेगा, मेरे यहां कौन सास पतोहू बैठी हैं।

कामि०-नहीं २ तूं तो नित्यही बनाती थी पर ऐसा गजरा तो किसी दिन नहीं बना निश्चय आज किसी दूसरे का बनाया है,।

लीला-मैं तो पहिलेहीं कह चुकी कि मेरे यहां कोई दूसरा तो है नहीं कि जो बना देता। [आकाश देखकर] अब दोपहर हुआ चाहता है मुझको आज्ञा दीजिये।

कामि०-वाह २ आज तो आप अभिमान के मारे फूल के तुडुम हुई जाती हो, ऐसा कौन आपका सगा बैठा है जिसके लिये इतनी घबड़ाती हो। बैठ तुझे मेरी सोगन्द है सच २ बता

ह गजरा किसने बनाया है [मालिन का आंचर पकड़ के ींचती है]

लीला-नहीं बहिना नहीं, मैं कुछ न कहूंगी जड़ काट के ल्लव सींचने से क्या होगा, बैठे बिठाये कौन दुख मोल ले योंकि प्रीति करना तो सहज है पर निबाहना अत्यन्त कठिन । इस कारण इससे दस हाथ दूरही रहना अच्छा है ।

कामि०-वाह २ तूं बड़ी हठीली चंचल नारि है एक ज़रा बात कहने में इतना बहाना करती है, क्या मुझ से भी ुपाने की कोई बात है जो नहीं बताती ।

लीला-मैं तो तुम्हारे लिये प्राण देती हूं और ईश्वर से त्य यही मनाती हूं कि हमारी राजपुत्री को सुन्दर बर मिले र मैं देख २ अपने नेत्र शीतल करूं । और आप उसके बदले झपर क्रोध करती हो । ईसी खोज में मैं रात दिन निमग्न ती हूं ।

कामि०-तो साफ़ २ क्यों नहीं बताती आधी बात कहती आधी उदर में रखती है व्यर्थ समय नष्ट करती है ।

लीला-सुनिये दक्षिण देशीय मधुपुरी के चन्द्रसेन राजा का न तो आपने सुनाही होगा, उसका पुत्र कुसुम जिसको बु-ने के लिये महाराज ने जमुना भाट को भेजा है वह यहां यं आया है ।

कामि०-[घबड़ाकर] कहां २ [फिर कुछ लज्जित होकर] ां क्या वह सचमुच यहां आये हैं ?

लीला-[खिलखिलाकर] मैं उसको बड़े यत्न से लाई हूं क्योंकि मैं सर्वदा खोजा करती थी कि हमारी बेटी को दूलहा चन्द्रमा का टुकड़ा मिले तो मैं सुखी होऊं सो मैंने कहीं से खोजकर उसे अपने घरमें रक्खा है, पर यहां तो वही दशा है "जाके हित चोरी करी सोई बनावे चोर"।

कामि०-तो फिर वे छिपके क्यों आये हैं।

लीला-आपकी प्रतिज्ञा तो संसार में सब पर बिदितही है सो प्रत्यक्ष बाद करने में जो कोई हारैं तो प्रेम भङ्ग होय और परस्पर संकोच लगे इस कारण छिपके आये हैं।

कामि०-उनका रूप कैसा है।

लीला-उनका रूप बर्णन के बाहर है [गाती है]

[राग बिहाग]

कहै को चन्द्र बदन की शोभा ॥ २ टेक ॥
जाको देखत नगर नारिको सहजहि ते मनलोभा ।
मनु चन्दा अकाश छोड़ि के भूमि लखन को आओ ॥
कैधौं काम बाम के कारण अपनों रूप छिपायो ।
भौहं कमान कटाक्ष बान से अलक भ्रमर घुंघरारे ॥
देखतही बेधत हैं मन मृग नहिं बच सकत बिचारे ॥

कामि०-तो भला उनको मैं एकबेर किसी उपाय से देख सक्ती हूं।

लीला- वाह २ यह तुमने अच्छी कही, पहिले राजा रानी से कहैं वह देख सुनके जांच लें तब तुम देखना।

कामि०-नहीं मां ऐसा न होने पावे पहिले मैं देखलूं तब और कोई देखे ।

लीला-मैं कैसे पहिले तुम्हें दिखला दूं । यह राजगृह है, यहां मक्खी तो आही नहीं सक्ती चारों ओर चौकी पहरा है, भला वह कैसे आसक्त हैं जो कोई जान जायगा तो क्या होगा ।

कामि०-सो मैं कुछ नहीं जानती जैसे चाहो वैसे एक बेर मुझको उनका दर्शन करादो । तूं आप चतुर है कोई न कोई उपाय सोचलेना और जो तूं मेरा मनोरथ पूरा करेंगी तो मैं भी तेरा मनोर्थ पूरा करदूंगी ।

लीला-यह तो में भी समझती हूं पर मैं सोचती हूं कि किस रीति से उन्हें यहां ले आऊं । हां एक उपाय है, वह इस वृक्ष के नीचे ठहरें और तुम अपनी अटारी पर देखलो ।

कामि०-हां ठीक है, यह उपाय बहुत अच्छा है पर कब आज या कल ।

लीला-कल उनको लाऊंगी [हंसकर] पर एक बात मैं कहे देती हूं कि उनको एकबेर देखके भूल न जाना ।

कामि०-भूल जाउंगी हाय ? [गाती है]

[राग बिहाग]

बेधत हैं जिय मारि २ के तानि श्रवन लगि बान ॥ टेक ॥
पिया बिना निसिदिन डरपावत मोहि अकेली जान ॥
तुम्हरे बिनु को धीर धरावे पीतम चतुर सुजान ।
बिरह की पीर चढ़ावत मोपै काम कमान ॥

लीला-[हंसकर] वाह २ यह अनुराग में नहीं जानतीथी।

(गाती है) [राग कलिंगड़ा]

अहो तुम सोच करो मति प्यारी २ ॥ टेक ॥
तुह्मरो प्रीतम तुमहिं मिलैहौं करि अनेक उपचारी।
अति कुह्मिलानों कमल बदन कों प्रफुलित करिहौं बारी।
चन्दहिं जो चाहे तो लाऊं यह तो बात कहारी ॥

कामि०-तो मैं छत पर उनकी आशा देखूंगी।

॥ तृतीय गर्भाङ्क ॥

॥ स्थान चोरों की बैठक ॥

[चोरों का सरदार रायजी बैठा है और उसके साथी लोग उसकी प्रशंसा कर रहे हैं]

प० चो०-कृपानिधान तस्कर राज ! जो आपने चार साथियों को शहर में भेजा था वह अबतक लौट कर नहीं आये कदाचित ज्यादा माल हाथ लगा हो।

राय०-हो सक्ता है या कोई बलाय में फंस गये हों।

दू० चो०-जी दयासिंधु यहू होसकाला।

ती० चो०-हां दीन दुखदाता हमरेऊ मन में कुछ २ सङ्का होत बाड़े काहे कि नांक को बांयों सुर चलत बा [इतने में कई सज्जनों का आना जो उसको भला आदमी समझते थे]

राय०-ओ लण्ठ चुप रह।

सज्ज०-जैगोपाल रायजी !

राय०-जैगोपाल साव जैगोपाल [उठ कर बैठाता है] कहिये नगर का आजकल क्या समाचार है ।

सज्ज०-आजकल तो जिधर देखिये उधर कामिनी के विवाह का प्रसंग चल रहा है ।

राय०-मैंने सुना है कि कामिनी अति रूपवती विद्यावती है।

सज्ज०-जी महाशय [इतने में चार साथियों में से एक का फिर आना, सरदार की ओर उसकी ढपे पर्दे बात चीत]

राय०-कहो गांव की रीति ।

साथी-एक दब मरल भीत ।

राय०-ऐसा ।

साथी-एक के मारेसि भैंसा ।

राय०-जेह: ।

साथी-एक नदी में गयल बेह.

राय०-सच ?

साथी-हमहीं तो आये बच ।

राय०-[सज्जनों से] अच्छा आज आप लोग जाइये आज मुझे जरूरी काम है कल मिलूंगा ।

सज्ज०-जैगोपाल ।

राय०-जैगोपाल साव जैगोपाल [सज्जनों का जाना]

[साथियों से] ओः बड़ा अनर्थ हुआ तीन साथी खाम आये, अच्छा चलो राजकुमारी कामिनी को चुरा लावें सुनते हैं

कि वह बड़ी रूपवती है।

साथी-जी सरकार मैंने भी ऐसा सुना है जहां पर हमारा एक साथी दब मरा वहां भी उसकी प्रशंसा होती रही।

[चोरों का ऐंठते ऐंठते जाना]

॥ चतुर्थ गर्भाङ्क ॥

॥ स्थान कामिनी का मन्दिर ॥

[कामिनी बैठी हुई है कन्दला पंखा झलती है और प्रियम्बदा हाथ में पान का डिब्बा लिये खड़ी है]

प्रिय०-[बीड़ा देकर] प्यारी एक बात पूछूं पर जो बताओ।

कामि०-क्यों सखी क्यों नहीं पूछती मेरी ऐसी कौन सी बात है जो तुम लोगों से छिपी हो।

प्रिय०-और कुछ नहीं मुझे केवल इतना पूंछना है कि कई दिन से तुम्हारी ऐसी दशा क्यों हो रही है।

कामि०-[लाज से चुप हो जाती है]

प्रिय०-यह तो मैं पहिलेही जानती थी कि तुम न कहोगी।

कामि०-नहीं सखी मैं क्यों न कहूंगी पर तूं क्यों उसका कारण अब तक नहीं जानती।

प्रिय०-जो जानती तो क्यों पूंछती।

कामि०-लीला मालिन जो उस दिन गजरा लाई थी उसे क्या तूं ने नहीं देखा था।

प्रिय०-हां देखा तो था उस से क्या ?

कामि०-और उसी दिन छत पर से मैंने जिसे वृक्ष तले देखा

था उसे भी क्या तूने नहीं देखा ?

प्रिय०-हां यह सब तो मैंने देखा था।

कामि०-तो अब नहीं क्या जानती ?

प्रिय०-तो फिर उसमें इतना सोच बिचार क्यों, केवल एक बेर महारानी जी से कहने से सब काम सिद्ध हो जायगा।

कंद०-वाह २ क्या इसी बात का इतना सोच बिचार था, तो मैं अभी जाती हूं [जाना चाहती है]

कामि०-नहीं २ ऐसा काम कभी न करना नहीं तो सब बात बिगड़ जायगी।

कंद०-क्यों इसमें क्या दोष है।

प्रिय०-और यह न होगा तो होगा क्या।

कामि०-सखी मेरी प्रतिज्ञा ने सब बात बिगाड़ रक्खी है।

कंद०-क्यों

कामि०-मां से कह देने से फिर उनके संग बिचार करना पड़ेगा, और उसमें जो मैं जीती तौ भी अनुचित है क्योंकि मैं अपना प्राण धन सब उनसे हार चुकी हूं, और फिर उनसे बिबाह भी कैसे होगा, और जो वह जीते तो इस बात का लोगों को निश्चय कैसे होगा कि चन्द्रसेन राजा के पुत्र यही हैं, और निश्चय बिना तो बिवाह भी नहीं हो सक्ता, इस से मेरा जी दुबिधा में पड़ा है, और जिस दिन से मैंने उन्हें देखा है उस दिन से अपनें आपे में नहीं हूं। क्योंकि उस मनमोहन रूप को देखकर मैं कुल लाज दोनों को छोड़ चुकी

हूं हाय मुझे कोई उपाय नहीं सूझता।

[गाती है] (राग सोरठ)

सखि हम कहा करें कित जांय। बिनु देखे वह मोहनी मूरति नैना नाहीं अघाय॥ कछु न सोहात धाम धन यह सुख मात पिता परिवार। बसति एक हिय में उनकी छबि नयननि वही निहारि॥ सुमिरत वही ध्यान उनको ही मुख में उनको नाम। दूजो और नाहीं गति मेरी बिनु पिय और न काम॥ नैना दरशन बिनु नित तलफैं श्रवण सुनन को प्राण। बात करन को मुख तलफै गर मिलवे को यह प्राण॥

प्रिय०-हां इन बातों को तो मैं समझती हूं पर उपाय कोई नहीं दिखाता हम तो तेरे दुख से दुखी और तेरे सुख से सुखी हैं। जो किसी उपाय से यह सुख होय तो हम सब प्राण बेच-कर भी उसे कर सक्ती हैं। परन्तु यह ऐसी कठिन बात है कि उसका उपायही नहीं होसक्ता।

कंद०-इसमें क्या सन्देह है आज दिन राजा के प्रताप से सब देश थर थर कांपता है और चौकीदार लोग यमदूत की भांति द्वार पर खड़े रहते हैं तब यह दुर्गम बात कैसे होसक्ती है।

कामि०-[लम्बी सांस लेकर] हाय सखी अब मैं क्या क-रूंगी जो शीघ्रही कोई उपाय न होगा तो प्राण कैसे बचेंगे। यह प्रीति दई मारी बड़ी दुखद होती है लीला मालिन ने ह-मको बचन तो दिया है कि किसी भांति उन्हें एक बेर तुम से मिला दूंगी, पर देखूं वह क्या उपाय करती है।

[गाती है] [राग बिहाग]

बावरी प्रीति करो मति कोय ।
प्रीति किये कौनें सुख पाया माहि सुनाओ मोय ॥
प्रीति कियो गोपिन माधो सों लोक लाज सब खोय ।
उनके छोड़ि गये मथुरा को बैठिरहीं सब रोय ॥
प्रीति पतंग करत दीपक सों सुन्दरता कहँ जोय ।
सो उलटो तेहि दाह करत है पंख नसावत दोय ॥
जानि बूझि कें प्रीति करी हम कुल मरजादा धोय ।
अब तो प्रीतम रंगी रंग में होनी होय सो होय ॥

[एक सुरंग का मुंह खुलता है और उसमें से कुसुम निकलता है] [सब सखी घबड़ा जाती हैं और कामिनी लाज सें मुंह नीचे कर लेती है]

कंद०-अरे यह कौन है और कहां चला आता है।

प्रिय०-सोई तो मैं भी घबड़ाती हूं कि यह कौन है और कहां से आया है, अब मैं चोर २ कहकर पुकारती हूं जिसमें सब चौकीदार लोग दौड़कर हमलोगों को बचावें।

कामि०-[हाथ से पुकारने का निषेध करके धीरे से] नहीं २ मैं समझती हूं कि यह चोर नहीं है मेरा चित चोर है कोई जाकर उनसे पूछो।

कंद०-भला देख मेरी छाती कैसी धड़कती है इससे मैं तो नहीं पूंछनेकी। प्रियंबदा तूं जाकर पूंछ यह कौन है।

प्रिय०-चलो सखो हम तुम दोनों चलकर पूछें।

[दोनों पूछती हैं]

तुम कौन हो और इस बिराने घर में क्यों घुस आये हो। हमलोगों का डर से कलेजा कांपता है तुम देवता हो, दानव हो या मनुष्य हो।

कुसु०-[मुसुकुरा कर] नहीं सखी डरने का क्या काम है न मैं देवता हूं, न दानव, मैं तो साधरण मनुष्य हूं। तुह्मारी राजकन्या के बिचार का समाचार सुनके यहां आयाहूं, परन्तु बिचार तो दूर रहे तुह्मारी सभा में अबिचार बहुत है।

कंद०-[धीरे से] सखी यह तो वही हैं।

प्रिय०-क्यों हमारी सभा में अबिचार कौन सा है ?

कुसु०-और अबिचार किसको कहते हैं। जो कोई परदेशी आवे तो न तो उसका आदर होता है और न कोई बैठाता है [कामिनी संकेत से बैठाने कहतीं है और कुसुम बैठता है] [और कामिनी लज्जा के मारे बस्त्र से सब शरीर ढांक लेतीहै]

कुसु०-[प्रिय० से] तुह्मारी सखी के गुणकी मैंने जैसी प्रशंसा सुनी थी उससे भी अधिक आश्चर्य्य गुण देखने में आये।

प्रिय०-ऐसे आपने कौन आश्चर्य्य गुण देखे।

कुसु०-जाल में चन्द्रमा को फंसाना, बिजली को मेघ में छिपाना, और बस्त्र से गुलाब की सुगन्ध को मिटाना, यह सब बात तुह्मारी राजकन्या करसक्ती है।

प्रिय०-[हंसकर] आप बड़े सुरसिक और पंडित हैं इस से मैं आपकी बात का उत्तर नहीं देसक्ती " दीपक की रवि के

उदय बात न पूंछे कोय" पर हां जो लज्जा न करती तो हमारी सखी कुछ उत्तर देती ।

कुसु०-[हंसकर] तो आज तुम्हारी राजकन्या हम से हारगई ।

प्रिय०-क्यों, हार क्यों गई ।

कुसु०-और हारने के माथे क्या सींग होती है, मुझे देखकर लाज के मारे कुछ उत्तर नहीं दे सक्ती इसीसे हारगई ।

प्रिय०-[हंसकर] आपको सब कहना शोभा देता है ।

कामि०-[सखी से] प्रियंवदा तुझे कुछ उत्तर देने नहीं आता तू क्यों नहीं कहती कि हमारी सखी ने बिद्या के बिचार का प्रण किया था, कुछ चोरी बिद्या के बिचार का प्रण नहीं किया था आप संध देकर घुस आये और अब बातें बनाते हैं ।

कुसु०-[हंसकर] हां इस देश के बिचार की चाल यही है और उलटे हमीं चोर बनाये जाते हैं । मैंने क्या अपराध किया था कि उस दिन वृक्ष के नीचे घंटों खड़ा किया गया और तुम्हारी राजकुमारी ने हमारा तन, मन, धन, सब लूट लिया अब कहो चोरी का आरम्भ किसने किया वही बात हुई कि "उलटा चोर कोतवाल को डांटै" ।

कामि०-और सुनो यह चोर नहीं हैं बड़े साधू हैं सच है साधू न होते तो संध देने की विद्या कहां सीखते यह कर्म साधुओं के ही तो हैं सखियो आज तुमने बड़े महात्मा का दर्शन किया निश्चय तुहमारे सब पाप कट गये क्योंकि शंख बजानेवाले साधु तो बहुत देखे थे पर संध लगानेवाले आजही देखे ।

कुसु०-[हंसकर] इसमें क्या सन्देह है, सखियो तुम परीक्षा करलो, कि हम में सब साधुओं के लक्षण हैं कि नहीं ? देखो मैं अपने चोर को ढूंढ़ता २ यहां तक आया और उसे पाकर उसको पकड़ने और धन फेरलेने के बदले और भी जो कुछ मेरे पास बचगया है भेंट किया चाहता हूं, परन्तु जो यहलें।

कामि०-[धीरे से] दीजिये।

कुसु०-[प्रसन्न होकर] सखियो तुम साक्षी रहना मन और प्राण तो इनने चोरी करके लेलिया एक देह बचगई है इसे मैं अपनी ओर से अर्पण करताहूं [कामिनी से] प्यारी मैं यहां केवल इसी हेतु आया था सो तुमने मुझे अपना करलिया है, अब इसका निबाह करना, [हाथ बढ़ाता है] [कामिनी लज्जा से सिर नीचा करलेती है]

प्रिय०-(हंसकर कामिनी से) सखी अब बिलम्ब क्यों करती है क्योंकि राजपुत्र तुझे अपना शरीर समर्पण करके पाणिग्रहण के हेतु हाथ फैलाये हुये हैं इससे या तो तुम इनकी बनो या इन्हें अपना करो, और हस्त कमल के संग अपना हृदय कमल भी राजपुत्र को अर्पण करो क्योंकि "शुभस्यशीघ्रम्"।

कुसु०-(प्रसन्नता से कामिनी का हाथ अपने हाथ में लेकर) अहा हा ! ऐसा भी कोई दिन होगा।

प्रिय०-अब होनेमें बिलम्ब क्या है, परन्तु मैं यह बिन्ती करती हूं कि हमारी राजकुमारी अत्यन्त सीधी और सच्ची है क्योंकि इसने पहिलेही जान पहिचान में आपका विश्वास क-

रके अपना तन, मन, धन आपके अर्पण किया परन्तु आप सुरसिक और पंडित है इससे इस धनकी रक्षा का कोई उपाय कीजियेगा, [फूलकी माला से दोनों का हाथ बांधती है] हम भगवान से प्रार्थना करती हैं कि तुम दोनों सर्वदा ऐसी फूलकी माला की भांति आपस में प्रेम के डोरे में बन्धे रहो।

कुसु०-सखी हमभी हृदय से "एवमस्तु" कहते हैं ।

कंद०-राजनन्दिनीं तो इस समय कुछ कहनेही की नहीं पर मैं उसकी ओर से कहती हूं कि ऐसाही हो ।

प्रिय०-ऐसी नई बहू की प्रतिनिधि कौन नहीं होना चाहता।

कंद०-चल तुझे ऐसीहीं बातें सूझतीं हैं ।

प्रिय०-अब नये दुलहा दुलहिन को दूर २ बैठना उचित नहीं । इससे दोनों एक पास बैठो जिसे देख हमारी आंख सुखीहो।

कुसु०[हंसकर] ठीक है [कामिनी के पास बैठता है और कामिनी कटाक्ष से देखती है]

प्रिय०-सखी सब बातें हो चुकीं तो अब गन्धर्ब विवाहकी कुछ रीतें बचीं क्यों जाती हैं । अब तुम दोनों माला का अदला बदला करो जिसे देख हम सुखी हों ।

[कुसुम के यत्न से दोनों परस्पर माला बदलते हैं और सखी लोग आनन्द से ताली बजाकर गाती हैं]

शुभघड़ी छाई आनन्द है, प्यारी कामिनी के चित छाये राजगुनी, सब मिलकर यही गावोरी २ शुभघड़ी हरलाय, चन्द्रमुखी राज बालक पाय ।

कामि०-[स्वगत] बिधाता क्या सचमुच आज ऐसा दिन हुआ है, कि मैं सपना देखती हूं नहीं यह सपना है ।

कंद०-हमारे नेत्र आज सुफल हुये [गाती है]

आजु अति मोहि अनन्द भयो ॥ टेक ॥
बहुत दिवस की इच्छा पूजी सब दुख दूर गयो ।
यह सुहाग की राति रसीली सब मिली मंगल गाओ ॥
जन्म लियो को आज मिल्यो फल अखियां निरखि सिराओ ।
दिन २ प्रेम बढ़ो दोउन को सब अतिहीं सुख पावें ॥
चिरजीवो दुलहा अरु दुलहिन दोउ करजोरि मनावें ॥

कुसु०-अहा हा कैसा मधुर गीत है, सखी जो तुझे कष्ट न हो तो एक गीत और गा ।

प्रिय०-वाह २ ऐसे आनन्द के समय में और मैं गीत न गाऊं तिसमें नये जामातृ की पहिला आज्ञा न मानना अनुचित है ।

कंद०-सखी हमारी राजपुत्री ने उस दिन जो गीत बनाई थी सो क्यों नहीं गातीं ? क्योंकि नये बर उस गीत से निश्चय प्रसन्न होंगे ।

[कामिनी आंखों से निषेध करती है और प्रियम्बदा उसी गीत को गाती है और कन्दला ताल देती है]

जहां पियतहीं सबै सुख साज २ ॥ टेक ॥
बिनु पिय जीवन व्यर्थ सखीरी यद्यपि सबै समाज ।
जो अपुनों पीतम संगनाहीं सुरपुर कौने काज ॥
निरजन बन हूं मैं पीतम के संग सुरपुर को राज ॥

कुसु०-वाह २ बहुत अच्छा गीत गाया जैसे मेरे कान में अमृत धारा की वर्षा हुई, सखी सुरपुर के सुख का आज मुझे यथार्थं अनुभव होता है ।

प्रिय०-क्यों मेरे गाने से, जो होय, अब रात बहुत गई और नई बहू के मिलाप में पहिलेही दिन देरी करनी उचित नहींहै ।

कुसु०-हां सखी अब जाता हूं [अंगूठी उतार कर सखियों को देता है] यह हमारे संतोष का चिन्ह सर्वदा अपने पास रखना ।

प्रिय०-[लेती है] यद्यपि यह अंगूठी सहजही बहुमूल्य है परन्तु आपके सन्तोष का चिन्ह होने से और भी अमूल्य होगई और इसे सर्वदा बड़े प्यार से अपने पास रखेंगी ।

कंद०-आपकी प्रसादी फूल भी हमें रत्न के समान है ।

प्रिय०-तो अब उठिये ।

कुसु०-तुम आगे चलो हमलोग भी आते हैं ।

[प्रियम्बदा और कंदला आनन्द से जाती हैं उनके पीछे कामिनी का हाथ पकड़े हुये कुसुम चलता है]

[जवनिका गिरती है]

॥ द्वितीयाङ्क समाप्त ॥

तीसरा अङ्क।

॥ प्रथम गर्भाङ्क ॥

॥ स्थान कामिनी का मन्दिर ॥

[कामिनी और मालिन बैठी है]

कामि०-कहो उनके लाने का क्या किया-लम्बी चौड़ी बातेंही बनानी आती हैं।

लीला०-भला इसमें मेरा क्या दोष है. मैंने तो पहिलेही कहा था कि यह काम छिपा के न होगा और रानी से कहने को कहा तो तुमने मना किया उनसे कहा तो उन्होंने यह उत्तर दिया कि मांमी मैं परदेशी हूं मैं क्या कर सक्ता हूं राजा के घर में चोरी से घुसकर बच जाना भी साधारण बात नहीं है। मैं तो अब दैव कर्म्म करूंगा सो तूं घर में एक अग्निकुण्ड बनादे, वे तो यों कहते हैं पर देखूं उनका देवता कब सिद्ध होता है। एक नई बात और सुनने में आई है जिससे जी में तो रुलाई आती है और ऊपर से हंसी आती है।

कामि०-क्या कोई और भी नई बात सुनने में आई है?

लीला०-सुना है कि राजसभा में कोई सन्यासी आया है।

कामि०-तो फिर क्या!

लीला०-मैं सुनती हूं कि वह बिचार में सब सभा को तो जीत चुका है अब कहता है कि मैं राजपुत्री से शास्त्रार्थ करूंगा।

कामि०-ऐसा कभी होसक्ता है कि मैं सन्यासीसे विचार करूं।

लीला-क्या प्रण करने के समय तुमने यह प्रतिज्ञा थोड़ेही करी थी कि सन्यासी से बिचार न करूंगी " जैसा राजकुंवर वैसाही सन्यासी " ।

कामि०-तो मैं तो उससे बिचार नहीं करने की ।

लीला-अब नाहीं करने से क्या होता है और इसमें दोष क्या है जैसा तुह्मारा दिव्य राजा के कुल में जन्म है वैसाही दिव्य सन्यासी बर मिल जायगा । अच्छा है जैसी तुह्मारी चोटी है कुछ उससे भी लम्बी उसकी दाढ़ी सिर पर बड़ी भारी जटा है और सब अङ्ग में बिभूति लगाये हैं ऐसे जोगी नित्य२ नहीं आते अहा हा कैसा अद्भुत रूप है [गाती है]

अरे यह जोगी सब मन मानै ।
लम्बी जटा रंगीले नैना, जन्त्र मन्त्र सब जानै ॥
कामदेव मनु काम छोड़ि के, जोगी ह्वै बौरानै ।
या जोगिया की मैं बलिहारी, जग जोगिन को यो जानै ॥

अरे ऐसा रसिक जोगी बर मिलता है अब और क्या चाहिये ।

कामि०-चल तू भी चूल्हे में जा और जोगी भी ।

लीला-ऐसा कभी न कहना मैं भले चूल्हे में जाऊं पर सन्यासी बिचारा क्यों जाय भला मैं यह पूछती हूं कि एक भलेमानस के लड़के को मैंने आस देकर घर में बैठा रक्खा है उसको क्या दशा होगी ? क्योंकि तुम तो महादेवजी की सेवा में जाओगी पर वह बिचार क्या करेगा तुम सन्यासी को लेकर आनन्द करना वह बिचारा आप सन्यासी होकर हाथ में डं-

डंकमंडुल ले तुह्मारे नाम से भीख मांग खायगा ।

कामि०-चल लुच्ची ऐसी दशा शत्रु की होय मैं तो उन्हें उसी दिन बर चुकी जिस दिन उनका आगमन सुना और उसी दिन उन्हें तन, मन, धन, दे चुकी जिस दिन उनका दर्शन किया इससे अब प्राण कहां रहा और बिचार का क्या काम है ।

लीला०-पर मन के लड्डू खाने से तो काम नहीं चलैगा क्योंकि मन से हमने इन्द्र का राज्य करलिया तो इससे क्या होता हैं । राजा यह बात कैसे जानैंगे और रानी इस बातको क्या समझतीं हैं कि मेरी कन्या का गन्धर्व बिवाह हो चुका है, और जब सन्यासी से ब्याह देंगी तब तुम क्या करौगी और तब वह कहां जायगा ।

कामि०-हां तुमतो इस बात से बड़ी प्रसन्न हो तुह्मारी क्या बात है मैंने कई बेर कहा कि उनको एक बेर मुझ से और मिलादे पर तूं उन्हें कब छोड़ती है, अरी पापिन जमाई को तो छोड़ देती, पर तौभी तूं धन्य है कि इस उतरती अवस्था में भी तेरा मद नहीं उतरा जब इस समय यह दशा है तो चढ़ी जवानी में न जाने क्या दशा होगी ।

लीला-सच है उल्टा उराहना तो मुझे मिलेहीगा तुमको सब बात में हंसी सूझती है पर मुझे ऐसा दुख होता है कि उसका बर्णन नहीं होता हां "जो बिधि चन्दहिं राहु बनाओ सोइ तुम कंह संयासी लाओ" इस दुख से तो प्राण त्याग करना अच्छा है मेरी तो छाती फटी जाती है यह मैंने जो

सुनो सो कहा अब तुम जानों तुम्हारा काम जाने ।

कामि०-नहीं २ मैं तो तेरे भरोसे हूं जो तूं करेगी सो होगा भला उनसे भी एक बेर यह समाचार कहदे ।

[कन्दला आती है]

कंद०-राजकुमारी पूजा का समय हुआ ।

कामि०-चलो सखी मैं अभी आई । [कंदला जाती है]

लीला-तो मैं आज जाकर उनसे यह वृत्तान्त कहती हूं, इस पर वह जो कहेंगे सो मैं कल तुम से फिर कहूंगी ।

कामि०-ठीक है कल वह अवश्य इसका कुछ उपाय करेंगे ।

दूसरा गर्भाङ्क ।

[स्थान कामिनी का मन्दिर]

[कामिनी अकेली बैठी है और कुसुम आता है]

कामि०-आज मेरे बड़े भाग्य है कि आप सांझही पधारे ।

कुसु०-[पास बैठकर] प्यारी मुझे जब तेरे चन्द्रमुख का दर्शन हो तभी सांझ है ।

कामि०-परन्तु प्राणनाथ यह दिन सर्वदा न रहेंगे चार दिन की चांदनी है ।

कुसु०-हां यह तो मैं भी कहता हूं ।

कामि०-क्यों ।

कुसु०-क्योंकि मुझे "बैठिये" तो कभी नहीं सुनाता और "जाइये" प्रायः सुनता हूं तो अवश्य ऐसा होगा ।

कामि०-वाह २ अब तो आप बड़ी हंसी करना सीखे हैं

कहिये के उपास में यह बिद्या आयी है [पान देती है]

कुसु०-पहिले आप गृहण कीजिये।

कामि०-भला यह बात तो हुई आज सवेरे मालिन आई थीं उसका समाचार आप जानते हैं।

कुसु०-हां सो तो वह नित्य सबेरे आतीं है आज बिशेष क्या हुआ, क्या उसको किसी ने एक दो धौल लगाई।

कामि०-भला मेरे सामने ऐसा कभी होसक्ता है और फिर वह ऐसी डरपोंकनी हैं कि जो उसको कोई मारता तो वह तुर्त रानी से जाकर सब समाचार कहदेतीं तौभी तो बुरा होता।

कुसु०-तो उससे बहुत चौकस रहना चाहिये।

कामि०-नहीं इसका कुछ भय नहीं है पर एक दूसरी बात जो मैंने सुनी है उसका बहुत भय है।

कुसु०-क्या कोई दूसरा घोटाला हुआ।

कामि०-एक बड़े पंडित सन्यासी आये हैं वह मुझ से बिचार किया चाहते हैं।

कुसु०-[बिषाद से] यह बड़ा घोटाला हुआ मैं उस सन्यासी को जानता हूं क्योंकि जब मैं बर्धमानको आता था वह मार्ग में मुझे मिला था, वह निश्चय बड़ा पंडित है इस से उसको बिचार में जीतना कठिन है।

कामि०-तब क्या होगा।

कुसु०-होगा क्या "चोर का धन बटपार लूटै"।

कामि०-भगवान ऐसा न होकि मुझे उससे बिचार करना पड़े।

कुसु०-जो महराज बिचार करनेकी आज्ञा देंगे तो करनाही होगा।

कामि०-हां यह तो ठीक है हाय २ मैं बड़े दुबिधे में पड़ रही हूं कि क्या करूंगी ।

कुसु०-तुम्हें किस बात का सोच है "पुराना कपड़ा उतारा नया पहिना" सोच तो मुझे है ।

कामि०-[खेदसे] चलो सब समय हंसी नहीं अच्छी होती "पुराना उतारा नया पहिना" यह तो पुरुषों का काम है स्त्री बिचारी तो एक बेर जिसकी हुई जन्म भर उसी की हो रहती है ।

कुसु०-[हंसकर] ऐसा मत कहो क्योंकि स्त्रियों के चरित्र अत्यन्त बिलक्षण होते हैं । "त्रिया चरित्र जाने नहिं कोय, खसम मारि के सत्ती होय" ।

कामि०-[क्रोध से] चलो तुम बड़ी ठग हो मैं तो नये पुरुषों का मुख भी नहीं देखने पाती मैं नई पुरानी क्या जानूं आपही नित्य नई २ स्त्रियों को देखते हैं आप जानें ।

कुसु०-तो क्या हुआ इतने दिन तक राज सुख भोग किया अब जोगिन का सुख भोग करना ।

कामि०-यह बात कैसे होसक्ती है कि जिसके बियोग में एक पलक प्रलय सा जान पड़ता है उसको छोड़कर मैं जोगिन हूंगी हां मैं सन्यासिनी हूंगी हे भगवान तूने कर्म्म में क्या लिखा है [अत्यन्त शोच करती और लम्बी सांस लेती है]

कुसु०-[हंसकर] और जो वह सन्यासी हमीं होंय ।

कामि०-यह बात कैसी ।

कुसु०-नहीं मैंने एक बात कही कि जो वह सन्यासी हमीं होय।

कामि०-तो फिर तुम्हारे लिये तो मैं जोगिन आपही हो रही हूं इसमें क्या कहना है।

[गाती है][राग केदारा]

अरे मैं तो सदा संगाती रे ॥ टेक ॥
कारण तेरे कंथा पहिरूं भसम लगाऊं, बइरागीनि होइ फिरूं रे।
गिरवर बासा रहहुं उदासा, चढ़ि सिर मेरु पुकारूं रे ॥
यह तन जारूं यह मनगारूं करवत शीश चढ़ाऊं रे।
शीश उतारु तुम्हपरवारूं, नाथ बलि बलि जाऊं रे ॥

जो यह बात सच होय तो शीघ्रही कहो तुम्हें मेरी सौगन्ध है जब से मैंने उसका समाचार सुना है तब से मुझे रात को नींद नहीं आती।

कुसु०-[हंसकर] जो तुमें दुख होता है तो मैं कहता हूं पर किसी से कहना मत, अपनी सखियों से भी न कहना देखो मैं राजसभा देखने को सन्यासी बनके गया था और मैंने बिचारा कि यहां बिचार की चर्चा निकालें देखें क्या फल होता है।

कामि०-हाय ! अब मेरे प्राण में प्राण आये अरे तुम बड़े बहुरूपिया हो और तुम्हें बड़े २ नखरे आते हैं, पुरुष में तो यह दशा है जो स्त्री होते तो न जानें क्या करते चलो तुम बड़े छली हो, मुझे कैसा धोखा दियो भला तुमने यह विद्या कहां सीखी [कुछ ठहर कर] हां तब क्या हुआ।

कुसु०- हुआ क्या पर राजा ने कुछ निश्चय नहीं किया।

कामि०-यह बड़ा आनन्द हुआ, मुझे आज रात को नींद सुख से आवेगी कल मैं ने मालिन से हंसी में यह बात उड़ा दी थी पर भीतर मेरा जीही जानता था और मैं ने आप से भी कई बेर कहना चाहा पर सोचती थी कि कैसे कहूं ।

[प्रियम्बदा आती है]

प्रिय०-राजकुमारी रात बहुत गई जो बहुत जागेगी तो कल दिन को जी आलस में रहैगा ।

कामि०-नहीं सखी अब जाती हूं । [प्रियम्बदा जाती है]

कुसु०-उठिये अब बिलम्ब मत कीजिये ।

कामि०-पर एक बेर मुझे भी उस रूप का दर्शन करादेना क्योंकि मुझे भी तो जोगिन बनना है ।

कुसु०-प्यारी उस प्रेमकी जोगिन होना तुम्हीं को शोभा देता है।

कामि०-नाथ तुम जो कहो सो सब उचित है [जान]

॥ तृतीय गर्भाङ्क ॥

॥ स्थान राजमार्ग ॥

[बिमला और कन्दला आती है]

विम०-बाहरे २ कैसी दौड़ी चली जाती है देखकरभी ब-हाली दिये जाती है ।

कंद०-[देखकर] नहीं २ मैं ने तुम्हें नहीं देखा क्षमा करना।

बिम०-भला मैं ने क्षमा तो किया पर अपनी कुशल कहो ?

कंद०-कुशल मैं क्या कहूं उस दिन के तो समाचार तू ने सुनेही होंगे ।

बिम०-कौन समाचार राजकन्या के बड़े घरकी बात ?

कंद०-अरे चुप २ बहिना धीरे २ जो कोई सुनले तो कहै कि यह सब ऐसीही रनवास की सबको कहती फिरती होगी।

बिम०-हां तो फिर रानी ने सब बात जानकर क्या कहा ?

कंद०-कहैगी क्या अपना सिर, राजकुमारी को बुलाकर बड़ी ताड़ना किया और हमलोगों पर जो क्रोध किया उसका तो कुछ पारही नहीं है और राजा से जाकर सब कहदिया राजाने और भी दस बीस बात सुनायी क्रोध से लाल होकर कोतवाल को आज्ञा दिया कि नंगे शस्त्र लेकर रातभर राजकुमारी के महल के चारो ओर घूमा करो और किसी प्रकारसे उस चोरको पकड़ो।

विम०-[घबड़ा कर] तब क्या हुआ ?

कंद०-उसी समय से कोतवाल ने हमलोगों के महल में बड़ा उपद्रव मचा रखा है और कहां तक कहैं कई चौकीदार स्त्री बन २ के कामिनी के सोने के महल में रातभर बैठे रहे, पर जिसके कारण इतना उपद्रव हुआ वह अभी यह समाचार नहीं जानता तो फिर उसकी क्या दशा होगी, इस सोच से कामिनी रातभर रोती रही यद्यपि हमलोगों ने बहुत समझाया परन्तु उसको धीरज कहां, इसी बिपत में सब रात कटी ।

बिम०-फिर सबेरे क्या हुआ सो कहो ?

कंद०-फिर क्या हुआ सो तो मैं ठीक २ नहीं जानती पर कोतवाल सबेरे सिर पटकते चले गये और कामिनी ने मुझ से कहा कि तूं शोधले कि अब क्या होता है ।

बिम०-सो तूंने कुछ शोधपायी ?

कंद०-अबतक तो कुछ शोध नहीं मिली, लोगों के मुंहसे ऐसा सुनती हूं कि चोर पकड़ गया और एक आपत्य यह भी न है कि मैं तो किसी से पुंछ भी नहीं सक्ती परन्तु कोतवाल इत्यादिक बड़े प्रसन्न हैं इससे जाना जाता है कि चोर पकड़गया । मैंने पहिलेही कहा था कि इस कामको छिपाके करना अच्छी बात नहीं हैं [नेपथ्य में कोलाहल होता है] अरे यह क्या है, यह तो कोतवाल का शब्द जान पड़ता है और मानों सब इसी ओर आते हैं तो अब हमलोग किनारे खड़ी होजांय जिससे वह सब हमें न देखैं [दोनों एक ओर खड़ी होजाती हैं]

[नेपथ्य में फिर कोलाहल होता है और कोई आता है]

[हाथ बंधे हुये कुसुम और मालिन को लेकर चौकीदार आते हैं]

१ चौकी०-चल रे चल ।

२ चौकी०-आज इसका पांव फूल गया है, जिस दिन सुरङ्ग खोदकर राजकुमारी के महल में गया था उस दिन पैर नहीं फूले थे आज आप "गजगति" चलते हैं ।

कुसु०-क्यों व्यर्थ बकता है, राजा के पास तो सब चलतेही हैं वह जो समझेंगे सो उचित दंड देंगे फिर तुमको साढ़ेतीन चांवल की खिचड़ी पकाये बिना क्या अटकी है ।

१ चौकी०-अहा मानों हमारे राजपुत्र आये हैं, देखो सबलोग मुंह सम्भाल के बोलो कहीं अप्रसन्न न होजाय और उनकी

अक्षत चन्दन से पूजा करो लुच्चा, पाजी कहींका जिस दिन सेन्ध लगाया था उस दिन आदर कहां गया था आज आप बड़े पद्धति बने हैं, चल चुपचाप आगे चलाचल, नहीं तो [धक्का देता है]

२ चौकी०-सुनो भाई बहुत शब्द मतकरो, कोतवाल ने कह दिया है कि चुपचाप जाना हम पीछे २ आते हैं और सबलोग संगही महाराज के यहां चलेंगे इससे जबतक वह न आवें तब तक यहां चुपचाप खड़े रहो।

३ चौकी०-अच्छा आइये चोरजी यहां ठहरिये राजकन्या के महल में जाने का समय गया, अब कारागार में जाने का समय आया [सब बैठते हैं] [कुसुम दुख में गाता है]

राग केदारा।

तुमबिन और नहीं कोऊ मेरे। भवदुख मेटनहार॥
हा जगदीश दास दुख पावहि। स्वामी करहु संभाल॥
तुम बिन राम दहंहि एहू दर। दसो दिशा सब साल॥
देखत दीन दुखी क्यों कीजइ। तुम्ह हौ दीनदयाल॥
इस दीन लीन करि लीजइ। मेटहु सब जंजाल॥
हमारे तुमहीं हौ रखवाल॥

४ चौकी०-अहा हां अब तो परमेश्वर भले याद आनेलगे अभी हमारे रगड़े में तो पड़ेही नहीं।

१ चौकी०-हां देखो भाई भला यह तो परदेशी है पर इस रांड़ मालिन को क्या सूझी कि इसने ऐसा साहस किया।

२ चौकी०-अरे यह छिनाल, बड़ी छतीसी है इस उमर में भी

चोरी से यारों को बुलाया करती है तुमने इसे समझा क्या है ऐसा मन होता है कि इस रांड़ की जीभ पकड़ के खींचलें ।

[लीला के पास जाता है]

लीला-दुहाई दुहाई महाराज की हे धर्मदेवता तुम साक्षी रहनो, देखो यह सब मुझे अकेली पाकर मेरा धर्म लिया चाहते हैं, दुहाई राजाकी ? दुहाई कोतवाल की ?

३ चौकी०-चुप रह रांड़ चुपरह ? अब दुहाई सूझत है ।

[धर्मसिंह कोतवाल आता है]

धर्म०-क्यों रे तुमलोगों ने क्या शब्द मचा रक्खा है ।

लीला-दुहाई कोतवाल की, यह सब जो चाहते हैं सो गाली देते हैं, इस राज्य में स्त्रियों का ऐसा अपमान, महाराज धर्मसिंह आप तो न्यायशील हैं आप इसका बिचार क्यों नहीं करते ?

१ चौकी०-महाराज यही रांड़ सब कुकर्म की जड़ है और तिसपर ऐसी २ बातें बनाती है ।

लीला-एक मैंही दुष्कर्म करतीहूं और तुम सब साधूहो, देखो कोतवाल हम तो कुछ नहीं करते, और तुम सब हमारी प्रतिष्ठा बिगाड़ते हो ।

धर्म०-[हंसकर] हां हां री मैं तेरी सब प्रतिष्ठा जानता हूं पर यहां इससे क्या, सबलोग महाराज के पास चलें वह जो चाहेंगे सो करेंगे ।

लीला-अरे कोतवाल बाबा इस गरीबिनी को क्यों पकड़े लिये जाते हो । इस दुखिया के मारने से क्या लाभ होगा मुझे

अपने आपकी सौगन्ध जो कुछ मैं जानती हूं भगवान साक्षी है।

कुसु०-मामी इतनी शीघ्रता क्यों करती है हमलोग महाराज के पास चलते हैं जो महाराज उचित समझेंगे सो करैंगे।

लीला-[क्रोधसे] अरे दुष्ट तेरी मामी कौन है ? इसी के पीछे तो मेरा सर्वनाश हुआ, अब तेरा होमकुंड क्या हुआ और तेरे इष्ट देवता कहां भागगये ? अरे तू बड़ा जालिया और कपटी है और तूने मुझे बड़ा धोखा दिया अब मैं आज पीछे अपने घर में किसी परदेशी को न उतारुंगी।

धर्म०-अब भलेही न उतारना पर दरो ? इस उतारने का फल तो चखनाही पड़ैगा।

लीला-[रोती है] हाय २ मैं हाथ जोड़ के कहती हूं कि मैं इस विषय में कुछ नहीं जानती दुहाई भगवान की, [कोतवाल से] अरे बेटा ? तुम्हारे मा बाप मुझे बड़े प्यार से रखते थे, सो तुम उनके स्नेह पर मुझे छोड़दो और इसने जैसा कर्म किया है वैसा दगड दो, दुहाई कोतवाल की मैं बिना अपराध मारी जाती हूं।

धर्म०-इस बकने से क्या होता है अब तुम दोनों को महाराज के पास ले चलते हैं, उनकी आज्ञा से एक संगही बन्दीगृह में छोड़ देंगे।

[कुसुम का हाथ पकड़ कर कोतवाल जाता है और लीला को खींच के चौकीदार ले जाते हैं]

विम०-अब सचमुच चोर पकड़ा गया।

कंद०-जो आंख से देखता है उसको पूंछना क्या ।

विम०-पर बहिना ऐसा रूप तो न आंखों देखा न कानों सुना यह तो राजकन्या के योग्यही हैं । इसमें उनने अनुचित क्या किया क्योंकि जैसी सुन्दर वह है वैसेही यह भी हैं, ।

"उत्तम को उत्तम मिलै मिलै नीचको नीच ।

कंद०-पर उस निर्दई बिधाता से तो सही नहीं गई ।

बिम०-जैसे चन्द्रमाको राहू ग्रसै, हाय बिधाता बड़ा कपटी है।

कंद०-सखी अब और कुछ मत कह क्योंकि इस कथा के सुनने से मेरी छाती फटी जाती है और राजकन्या का दुख स्मर्ण करके मुझसे यहां खड़ा नहीं रहाजाता, देखैं और क्या २ होता हैं ।

बिम०-तो फिर कब मिलैगी ।

कंद०-जो जीती रहूंगी तो शीघ्रही फिर मिलूंगी ।

[दोनों जाती हैं]

॥ चतुर्थ गर्भाङ्क ॥

[स्थान कामिनी का महल] [कामिनी शोच से गाती है]

जियरा रे कलनहिं पायो सगरी रतिया रे ।
कहूं नहिं भावै कछु नहिं सुहावै हिया डरपावै बिरहतछतियां रे ॥
धड़कत आंस चढ़रही सांस जब सुधि आतीछाती बिसरत बतियारे ॥

[कन्दला और प्रियम्बदा आती है]

कंद०-[धीरे से] सखी मुझ से तो यह दुखकी कथा न कही जायगी तूही आगे चलकर कह ।

प्रिय०-तो तुम मत कहना पर संग चलने में क्या दोष

है जो विपत आती है सो भोगनीही पड़ती है।

कंद०- चल [दोनों कामिनी के पास जाती हैं]

कामि०-[घबड़ा कर] कहो सखी क्या समाचार लाईहो।

प्रिय०-सखी क्या कहूं कुछ कहा नहीं जाता, मेरे मुखसे ऐसे महान दुखकी बात नहीं निकलती, हाय हम इसी दुख देखने को जीती हैं सखी जिस प्रीतमके सुख से तूं सुखी रहती थी वह आज पकड़ा गया, हाय उसके दोनों कोमल हाथों को निर्दयी कोतवाल ने बांध रक्खा है हाय उसकी यह दशा देखकर मेरी छाती क्यों नहीं फटगई।

कामि०-[घबड़ाकर] अरे सचही ऐसा हुआ हाय फिर क्यो हुआ होगा [माथे पर हाथ मारकर] हो बिधाता तेरे मनमें यहीथी [मूर्छा खाकर गिर पड़ती है] [सखियां दुखी होती हैं] [कामिनी उठती है और बिरह में गाती है]

कोई तो मेरो प्रीतम लाइ मिलाव।
ऐजी जिया लागो गहरो घाव॥
तरसत बीतत रैन दिन, जैसे जल बिनुमीन।
खान पान विष सम लगे, भई दीन मति हीन॥

॥ कबित्त॥

"धिक है वह देह औ गेह सखी जेहिके बस नेहको टूटनों है।
उन प्रान पियारे बिना यह जीवहिं राखि कहां सुख लूटनों है॥
हरनारायनजू बात ठनी जियमें नितकी कलकान ते छूटनों है।
तजि और उपाय अनेक सखी अब तो हमको विष घूंटनोहै॥

सखी अब मैं किसके हेतुजिऊंगी आओ हम तुम अन्तिम भेंट करलें । फिर मैं कहां और तुम कहां, सखी मुझे इतना सोच रहगया कि मेरे हेतु प्राण प्रीतम बांधे गये जो प्राणनाथ बन्धन से मुक्त हों तो इतना संदेशा मेरा कहदेना कि मैंने तो तुम्हारी प्रीति का निवाह किया कि अपना जीवन दिया उन से मेरी प्रार्थना करना कि मेरे बियोग से दुखी न हों हाय मेरी छाती बज्र की हैं कि अबभी नहीं फटती है [रोती है और मूर्छा खाकर गिरती है]

प्रिय०-[गुलाव जल छिड़क कर उठाती है] सखी इतनी उदास न हो और रो रो के प्राण न दे यद्यपि जो तू कहती है सो सत्य है पर जब ईश्वरही फिर जाय तो मेरा तेरा क्या बश है हाय बादल से कोई बिजली भी नहीं गिरती कि हमें यह दुख न देखना पड़े सखी धीरज धर सखी धीरज धर ।

कामि०-[रोकर] सखी मन नहीं मानता ऐसा जो मैं जानती तो इस दईमारी निगोड़ी प्रीति को बैठे बिठाये क्यों मोललेती ।

जो मैं ऐसा जानती कि प्रीति किये दुखहोय ।
नगर ढिंढोरा फेरती कि प्रीति करै ना कोय ॥

हाय अब मै क्या करूंगी और कैसे दिन काटूंगी विधाता ने क्या दिखाकर क्या दिखाया । हाय मैंने जाना था कि मुझे मनमाना प्रीतम मिला अब मैं कभी दुखी न हूंगी सखी केवल दुखभोगने को मैं जन्मीहूं क्या ईश्वर की सब उलटी रीति है? कि जिस वस्तु से मुझे सुख होता उसी को हरण करलेता है।

प्रिय०—सखी यह सब पूर्वजन्म के फल हैं नहीं तो तुम राज-कन्या हो तुम्हारे दुःख पास न आना चाहिये, पर क्या करें तूं तो आप पण्डिता है तुझे क्या समझाऊं पर फिर भी कहती हूं कि धीरज धर॥

कामि०—सखी मैं चित्त को बहुत धीरज देती हूं पर धीरज नहीं धरता कर्म्म के फल न होते तो इतना दुख क्यों होता जो पिता माता प्राण देकर सन्तान की रक्षा करते हैं उन्हीं पिता माता ने मुझे जन्मभर के लिये दुखी किया।

कन्द०—सखी अब इन बातों से और भी दुख बढैगा अब चित्त से यह बातें उतार दे, किसी भांति धीरज धर मनको समझा।

कामि०—सखी मैं तो समझती हूं पर मन नहीं समझताहाय? जिसका सर्वनाश हो जाय वह कैसे धीरज धरै और कैसे समझे अरे प्राण बड़े अधम हैं कि अब भी नहीं निकलते—

(लम्बी सांस लेती और रोती है)

प्रिय०—अभी से इतना क्यों घबड़ाती है कदाचित महाराज छोड़-ही दें बिना कुछ भये इतना दुख करना उचित नहीं॥

कामि०—राजसभा में क्या होगा केवल हमारे शोकानल में पूर्णा-हुती दीजायगी और क्या होगा हाय प्राणनाथ इसअभागिनी के हेतु तुम्हें बड़े दुख भोगने पड़े॥

प्रिय०—सखी—इतना क्यों घबड़ाती है ईश्वर सबका सहायक है देख उसने कैसे २ दुखियों को सहायता किया है (गाती है)

पद—तुझे सहाय करेगा मुरारिरे, दादलेगा गोबरधन धारि।
अहल्या उधारि मीराबाई तारि, प्यारि चिन्ता करोना भारी॥
मौजारि के बच्चों को जलते बचाये, मोक्षदिया गजेन्द्र कोतारि।
द्रौपदि को वस्त्र दिन्हीं, वही करेगा सहाय कारी॥

कामि०—वाह सखी:तेरे इस धैर्य्य प्रद गायन ने मेरे प्रेमाग्नि से धधकते हुये चित्त के सन्ताप को बहुत कुछ शमन किया।

प्रिय०-सखी मैं क्या धीरज देने योग्य हूं अच्छा जो तूं कहै तो मैं छत पर से देखूं कि राज सभा में क्या होता है ॥

कामि०—जो तेरे मन में आवै और जिस से मेरा भला हो सो कर।

प्रिय०—कन्दला चल हम देखें तो, कि क्या होता है।

कन्द०—चल [दोनों जाती हैं]

कामि०—अब मैं यहां बैठी२ क्या करूंगी और मन को कैसे समुझाऊंगी हे भगवान मेरे अपराधों को क्षमा कर मैं बड़ी दीन हूं मैंने क्या ऐसा अपराध किया कि तूँ मुझे इतना दुख दे रहा है । नहीं भगवान का क्या दोष है सब मेरे भाग्यका दोष है (हाथ जोड़ कर) हे दीना नाथ हे दीन बन्धु-हे कृपा सिन्धु परमेश्वर मुझ अबला पर दया करो और जो मैं पतिव्रता हूं और जो मैंने सदा निश्छल चित्त से तुम्हारी आराधना किया हो तो मुझे इस दुख से पार करो।

[गाती है]

जल भरैया नाओ रे दुख की रे, भला कैसे नदिया तैरियां पैरियां रे। भारी नदी कठिन उतरइया प्रभू कर बेड़ा पार रे ॥

[नेपथ्य में कोई चिल्लाता है]

अरे यह राज काज के लोगों ने बड़ा अनर्थ किया कि बिना पहिचाने मधुपुरी के महाराज चन्द्रसेन के पुत्र राजकुमार कुसुम सेनको कारागार में भेज दिया--क्या किसी ने उसे नहीं पहिचाना, मैं अभी जाकर महाराज से कहता हूं कि यह तो वही हैं जिस के बुलाने के हेतु मुझे मधुपुरी भेजा था ॥

कामि०—(हर्ष से)अरे - यह कौन अमृत की धार बरसाता है अहाहाभगवान ने फिर दिन फेरे क्या ? अब मैं भी छत पर चल कर देखूं कि सभा में क्या होता है। [जाती है]



॥ पञ्चम गर्भाङ्क ॥

॥ स्थान राजभवन ॥

(महाराजा बीरसिंह सिंहासन पर विराज मान हैं और मंत्री पास बैठा है)

(वाराङ्गनाओं का आना और गीत गाना)

जाओ २ ननदिया ये कैसी सुनावो मोहे।
छलबलियां ये कैसी बतावोमो है। टेक
बीर तुम्हारो निठुरअनारी घर घर दर दर
अटकत भटकत नटखट वो हमहारो, अबतो ?
जाओ जी नाहक जलाओ मोहे-जाओ० ॥

(वाराङ्गनाओं का जाना)

(प्रतिहारी आकर) महाराज जमुना भाट मधुपुरी से लौट कर आये हैं।

राजा–कविराज को शीघ्र उपस्थित करो॥ (प्रतिहारी का जाना)

(जमुना भाट के सहित प्रतिहारी आता है)

भाट– थिर धर्मतं शामंतनो मुकटमणि इन्द्रो नो अंशदेवासि कहावै, पूरन परमारथि भव्य भण्डारथि। दुष्ट दल दमन भये शमन भावै, ॥ महाराज की सदाही जय हो ॥

राजा–कविराज क्या समाचार लाये हो।

भाट—महाराज जिसके बुलाने के हेतु आपने मुझको भेजा था वह यहां स्वयं पधारे हैं । यहां आने पर मुझ को विदित हुआ कि उनको चोर समझ कर कारागर दे दिया गया।

राजा–(आश्चर्य से) मंत्री कविराज ने जो कहा सो तुमने सुना ॥

मंत्री—महाराज-सब सुना

राजा—तो फिर उनको चोर जान कर कारागार में भेज देना अच्छा नहीं हुआ ।

मंत्री — महाराज पहिले यह कौन जानता था कि यह राजा चन्द्रसेन के पुत्र हैं केवल चोर समझ कर दंड दिया गया ॥

राजा—पर जबसे मैं ने उन्हें देखा तभी से मुझे संदेह हुआ कि यह कोई राज पुत्र है और मैं सत्य कहता हू कि उनकी मधुर मूर्त्ति और तरुण अवस्था देख कर मुझे बड़ा मोह लगता था-जो कुछ हो अब तुम बिलम्ब मत करो और शीघ्रही जाकर उन्हे ले आओ क्योंकि कोतवाल अभी कारागार तक न पहुंचा होगा ॥

मंत्री—जो आज्ञा महाराज मैंअभीजाता हूं (जाना चाहता है)

राजा—पर केवल कुसुम को लाना और कोतवाल इत्यादिकों को मत लाना ॥

मंत्री—जो आज्ञा (जाता है)

राजा—क्यों कविराज उन्हें भली भांति पहिचानते हो कि नहीं

भाट—महाराज मैं भली भांति पहिचानता हूं और पृथ्वीनाथ। बिना जाने मैं कोई बात निवेदन भी तो नहीं कर सक्ता।

राजा—तो चन्द्र सेन राजा का पुत्र यही है।

भाट—महाराज इसमें कोई सन्देह नहीं ॥

राजा—तुम जो न कहते तो बड़ा अनर्थ होता यह भी हमारे भाग्य की बात है कि ईश्वर ने धर्म बचा लिया पर मंत्री के आने में बिलम्ब क्यों हुआ इससे तुम जाकर देखो तो सही ॥

भाट—जो आज्ञा महाराज (जाता है)

राजा—(आपही आप) इतना बिलम्ब क्यों लगा? (सोच कर) कामिनी के संग जो इसका गंधर्व बिवाह हुआ वह अच्छा ही हुआ क्योंकि नीच कुल में बिवाह करने से तो मरना अच्छा परन्तु हमारी कामिनी ने कुछ अयोग्य नहीं किया, यह एक भाग्य की बात है, नहीं मैं तो अपने हाथ से कन्या को जन्म भर का दुःख दे चुका था, अहा भगवान ने बहुत बचाया (द्वार की ओर देखकर)

मंत्री अब तक नहीं आया (नेपथ्य में पैर का शब्द सुन कर) जान पड़ता है कि सब आते हैं, (जमुना भाट आता है)

भाट—महाराज मधुपुरी के राजपुत्र को मन्त्री आदर पूर्वक ले आते हैं (मंत्री और कुसुम आते हैं) ॥

राजा०—(कुसुम का मुख चूम कर) यहां आओ पुत्र यहां आओ

(हाथ पकड़ कर अपने सिंहासन पर बैठाता है)

बेटा मैं ने तुम को आज तक अनेक दुख दिये इस दोष को मैं स्वीकार करता हूं और यह मांगता हूं कि तुम आज से इन बातों को भूल जाओ ।

कुसु०—(हाथ जोड़ कर) महाराज आपका क्या दोष है यह तो आपने मुझे उचित दंड दिया था, यह केवल मेरे युवा अवस्था का दोष है, कि मैं ने आप के यहां अनेक अपराध किया सो मैं हाथ जोड़ कर चमा मांगता हूं ॥

राजा—(मंत्री से) मंत्री रनिवास से शीघ्रही पुत्रीको ले आओ ।

मंत्री—जो आज्ञा (जाता है)

राजा—बेटा मैं ने तुमको जितना दुख दिया है उसके बदले तो मैं तुम्हारा कुछ भी संतोष नहीं कर सकता—पर मैं इतना कहता हूं कि तुम ने कामिनी से जो गांधर्व विवाह किया उसमें मैं प्रसन्नता पूर्वक सम्मति प्रकट करता हूं जिससे तुम को अवश्य बड़ा संतोष होगा ॥

कुसु०—महाराज आपकी कृपाहो से मुझको बड़ा सन्तोष हुआ

(मंत्री आता है)

राजा—मंत्री क्या पुत्री आई ।

मंत्री—महाराज अभी आती है ।

राजा—(कुसुम से) बेटा तुम ने पकड़े जाने के समय अपना नाम क्यों नहीं बताया नहीं तो इतना उपद्रव क्यों होता ॥

कुसु० -महाराज जो मैं नाम बताता तो भी मेरी बात कौन सुनता और सभासद जानते कि यह प्राण बचाने को झूठी बातें बनाता है और फिर क्षत्रिय के निष्कलंक कुल में उत्पन्न हो कर ऐसे बुरे कर्म्म में अपना नाम प्रगट करने से प्राण त्याग करना उत्तम है।

(प्रियम्वदा कन्दला बिमला इत्यादि सखियों के सहित कामिनी नीची आंख किये हुए आती है)

कामि०-(धीरे से) सखी मैं पिता के सन्मुख क्या मुंह लेकर जाऊं।

प्रिय० -(धीरे से) जब पिता ने बुला भेजा है तब कौनसी लज्जा है।

राजा—आ मेरी प्यारी बेटी इधर आ, आज तक मैं ने तुझे अनेक दुख दिये उसको तूं चित्त से बिसार दे (उठ कर और कामिनी का हाथ पकड़ कर) प्यार यह लो बीर सिंह का सर्वस धन मैं तुझे आज अर्पण करता हूं यह बात तो कहना सर्वथा अनुचित है कि इस कन्या पर प्रीति रखना क्योंकि जो परस्पर अत्यन्त स्नेह न होता तो इतना दुख क्यों सहते परन्तु ईश्वर से यह प्रार्थना करता हूं कि आजसे तुम्हें कोई दुःख न हो और सर्वदा स्नेह रूपी पाश से बंधे रहो जैसे "कुमुदिनी और चन्द्र" (कामिनी का हाथ कुसुम के हाथ में देता है और नेपथ्य में मंगल ध्वनि से बाजे बजते हैं और वाराङ्गनाएं आकर सखियों सहित मंगल गान करती और पुष्पों की वर्षा होती है) ।

(पद)

धन्य है दिन ये सुभागि घड़ी आज कि—टेक
सुभागि घड़ी आज को सुभागि घड़ि आज कि
मन भाई घड़ी आज को आनन्द घड़ी आज की
खुशी से गावो सब सखि हिल मिल मनावो सब सखि
पुत्र सहित घर प्रेमदा प्यारि देवि सुख साजनि तुमोरि देवि ॥

(बाराङ्गनायें दोनों तरफ से लयताल के साथ जाती हैं)

(अपने २ स्थान पर सब बैठते हैं)

कुसु० — महाराज आपकी दयासे मेरे सब क्लेश दूर हुए परयह अनुचित है कि मैं आप के प्रसन्नता के हेतु कोई योग्य सेवा नहीं कर सका !!

राजा — इस बात को अब कोई चिन्ता मत करो ॥

भाट — कवित्त आज अनन्द भयो अति ही बिपदा सब की दुरि दूर नसाई । मोद बढ्यौ पर जागन कों दुख को कहूं नामन नेकुल खाई ॥ मगल छाई रह्यो चहुं ओर अशीसत हैं सब लोग लुगाई । जोड़ी जियो दुलहा दुलही को बधाई बधाई बधाई बधाई ॥

कुसु० — महाराज आपने मुझे सब सुख दिया तथापि एकप्रार्थना और है ॥

राजा — कहो ऐसी कौन बस्तु है जो तुम को अदेय है ।

कुसु० — (हाथ जोड़ कर) महाराज ने यद्यपि मालिन को प्राण दान दिया परन्तु देश से निकाल देने की आज्ञा है सो अब उसके सब अपराध छमा किये जांय ।

राजा (हँस कर) जो तुम कहते हो सोई होगा । (मंत्री से)

मालिन के सब अपराध छमा हुये । इस से अब उसे कोदंड न दिया जाय ॥

मंत्री — जो आज्ञा महाराज ।

राजा — मंत्री अब तुम शीघ्र ही व्याह के सब मंगल साज सजो, क्योंकि पुरवासियों को दुलहा दुलहिन के देखने को बड़ी अभिलाषा है ।

मंत्री० — जो आज्ञा, महाराज हम लोगों का जीवन आज सुफल हुआ ।

(बाराङ्गनाओं का आना और सब मिल कर ईश्वर की स्तुति करना)

(पद)

मंगलकर, भवभयहर, जय उमापती । प्रणतपाल, हे दयाल, शिव जी धुर्जटी । टेक ॥ गौर वर्ण अंग पर विराजित फणी ।

चन्द्रशेखर दिव्य देव के चूड़ामणि ।भस्मधारी, भीड़हारी, आरत द्योहनी ।

चरणे, शरणे, स्मरणे दुखहर्ता, सुखकर्त्ता, उरधर्त्ता, स्तुति आरती । धरणिधर गंग को जटा मध्यधरा शैलजा सहस्र वर्ष की तप से वरा।

भोलानाथ भक्त दुख होंश से हरा । तारी, प्यारी, धारी, त्रिपुरारि, दुखहारी,सुखकारी, प्रार्थनारती । सभ्यसज्जनों यह खेल पूर्ण तो भया । आप को अभिनय कर भेंट तो किया । दोष को क्षमा करके बोध मनधरा। आवो, भावो, गावो, कर प्रीति, प्रभु नीति गुणगीति, यह बिनती ॥

(जवनिका गिरती है)

॥ तृतीयाङ्क समाप्त ॥

॥ शुभं भूयात् ॥

॥ इति ॥



॥ श्रीः ॥

॥ नवीन कहावतें ॥

इस में अनेक प्रकार की शिक्षाप्रद नवीन कहावतें रक्खी गई हैं जिसके पढ़ने से मनुष्य की सामाजिक, दर्बारी तथा सभ्यता प्राप्त होती हैं। और अनेक स्थानों में इसकी बातों को स्मर्ण रखने से मनुष्य ऊँचे दर्जे को प्राप्त कर सक्ता है। और वाणी में अनेक लाभ पहुँच सक्ते हैं। इससे इसकी एक २ प्रति हर मनुष्य को अपने पास अवश्य रखना चाहिये ॥

॥ मन रंजन तैल ॥

यह सुगन्धित तैल दिमाग को बहुत ही खुश रखता है, तथा इससे कई किस्म की सिर की बीमारी जैसे कुसमय बाल का गिरना, सिर की पीडा इत्यादि दूर हो जाती है मूल्य फी शीशी ।।=) और कई किस्म की बिश्वनाथ बर्म्मा एन्ड को की बनीहुई उपयोगी दवाइयां हमारे यहां मिलती है ॥

॥ बनारसी आढत ॥

हमारे यहां हर किस्म का माल बनारसी मिलता है जो महाशय मँगाते हों उन्हें यहां भी अजमाना चाहिये ॥

पताः— चौबे हीरालाल

गनेश दीक्षित

बनारस सिटी।

॥ विज्ञापन ॥

———:o:———

हमारे यहां हर क़िस्म का सौदागरी सामान बहुतही उम्दा व फेन्सी हर क़िस्म का जैसे ताले, खिलौने, सरौते तरह २ के चश्मे, बटन, कंघी छाते, लैम्प, हाथरस के चाकू वग़ैरह स्टेशनरी सामान क़लम, दवात, काग़ज़, नोट पेपर वगैरहः इत्यादि बहुत सस्ता और किफ़ायत दाम पर मिलता है। ईमानदारी का सौदा है एक मर्तबे ख़रीदकर आज़मा देखिये ॥

॥ बेला चम्बेली नाटक ॥

नामही से समझ जाइये यह जादुगरी का नाटक अति मनोरंजक चित्त हरण अपनी षोडषों कला से सबके चितको सुगन्धित करके संगीत युक्त गायनों से मनको आकर्षित करता है। इसमें विशेषता यह है कि इसके सब पात्रों के नाम कोमल २ पुष्पों केही रक्खे गये हैं यह अत्युत्तम नाटक छपरहा है ॥

मिलने का पता—

(जी. बी. एच. एन्ड फ्रेन्डस)

चौक बनारस।